

विचार बिन्दु

ईश्वर आपत्तियों का भला करे क्योंकि इन्हीं से मित्र और शत्रु की पहचान होती है। -अज्ञात

पुस्तक खोलने से पहले उजाले का प्रबंध करना पड़ता है

कुछ साधियों की सलाह है कि मैं अपने जीवन के कुछ पचड़े यहाँ साझा करता हूँ। आज की चर्चा उसी का एक अंश है।

पुस्तक खोलने से पहले उजाले का प्रबंध करना पड़ता था। बत्ती को नाखून से खुरचकर ठीक करो। मिट्टी के तेल की शीशी तिरछी करके देखो कि उसमें कितना तेल बचा है। चिमनी पर कालिख जमी हो तो पुराने कपड़े से रागड़कर हटाओ। फिर लौ सँभालो। वह इतनी भी न बड़े कि धुआँ देने लगे और इतनी छोटी भी न रह जाए कि अक्षर आँखों से ओझल हों। हमारे बचपन में पढ़ाई का एक अंश पुस्तक के बाहर, इस उजाले की परिचर्या में घटित होता था।

मेरा जन्म 1963 में सराय में हुआ। विंध्याचल का नरो पहाड़ निकट था। बीस वर्ष की आयु में वन अधिकारी के प्रशिक्षण के लिए गाँव से निकलने तक वहाँ बिजली नहीं आई थी। संध्या होते ही पहाड़, खेत और आँगन क्रमशः अँधेरे में उतरते। घर के भीतर जितना प्रकाश सँभाल पाते, उसी में काम करना होता। आज अपनी शिक्षा की ओर देखातूँ तो पुस्तकों के साथ वह तेल की शीशी भी दिखाई देती है। उसमें बची अंतिम बूँद और सामने खुला पृष्ठ एक-दूसरे से अवरिचित नहीं थे।

तब उजाले का श्रम दिखाई देता था। लौ छोटी होती तो उसका कारण खोजना पड़ता। तेल कम है, बत्ती ठीक नहीं अथवा चिमनी की कालिख प्रकाश रोक रही है। बाद में सुविधा बढ़ी तो प्रकाश सहज उपलब्ध होने लगा। यह परिवर्तन आवश्यक और सुखद था। लेकिन उपलब्धि की सहजता के साथ उसके पीछे की प्रक्रिया दृष्टि से हट सकती है। बटन दबाने और कमरा आलोकित होने के बीच का श्रम दिखाई नहीं देता; उसका अस्तित्व बना रहता है। मेरे लिए बचपन की डिबरी इसी विस्मरण के विरुद्ध एक छोटी-सी साक्षी है।

वह साक्ष्य केवल प्रकाश तक सीमित नहीं था। कुर्छे से घर तक पानी पहुँचने में हाथ, कंधे और कमर लगते थे। जेठ की धूल, बरसात की फिसलन और जाड़े की ओस, प्रत्येक ऋतु उस दूरी को अपने ढंग से बदलती थी। बड़े परिवार में एक बार पानी लाना पर्याप्त नहीं होता। कुर्छे और घर के बीच बार-बार आना-जाना पड़ता। गंगरी भीतर रख दिए जाने पर भी काम समाप्त नहीं होता था। पीने का पानी अलग रखना है, धुलाई के लिए अलग; पशुओं की नौद भी भरनी है। जल के साथ विवेक घर में प्रवेश करता था।

किसी पात्र में भरे पानी को देखकर उसका पूरा परिचय नहीं मिल जाता। रस्सी की घिसावट, कुर्छे की गहराई, जगत की फिसलन और लौटते कंधे की थकान भी उसमें सम्मिलित हैं। बचपन में ये सब किसी विचार के प्रमाण नहीं थे। यही दिनचर्या थी। बाद में समझ आया कि उपभोग की वस्तु अपने भीतर अनेक अदृश्य संबंध संजोए रहती है। जब हम केवल वस्तु देखते हैं, तो उसे संभव बनाने वाले मनुष्यों और प्रकृति का एक बड़ा अंश हमारी दृष्टि से छूट जाता है।

अम्मा का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता था। इसलिए रसोई के अनेक काम मेरे हिस्से आते। कल की राख हटाने हुए अधजला टुकड़ा अलग रख लेना होता, जिससे आज की आग पकड़ सके। लकड़ी भीगी हो तो चूल्हा धुएँ से भर उठता। झुककर फूँक मारो। आँखें लाल होतीं, गले में कसैलापन उतरता। फिर बर्तन माँजने, ढाल बीनने, चावल फटकने और आटा पूँधने का क्रम। तब पर रोटी पड़ने तक इतने काम हो चुके होते कि उसे केवल भोजन बनाने का एक काम कहना वास्तविकता को बहुत छोटा कर देना होता। इसी बीच पानी घट जाए अथवा पशु पुकार उठे तो उठकर वह काम भी सँभालना पड़ता। भोजन तैयार होने के बाद बर्तन और रसोई शेष रहते। घर में किसी को थाली मिल जाय़ा का अर्थ किसी दूसरे का श्रम समाप्त होना नहीं था। स्वयं यह काम करते हुए उसकी निरंतरता समझ में आती थी। रोटी की गोलाई दिखाई देती है; उसे संभव बनाने में बीता समय उसमें अलग से अंकित नहीं रहता। स्मृति उस समय को बचाए रखती है। इसीलिए मेरे लिए चूल्हे का धुआँ केवल अतीत की गंध नहीं, घरेलू श्रम का साक्ष्य भी है।

मैं पढ़ता था, पर पढ़ाई इन कामों से बाहर सुरक्षित किसी दूसरी दुनिया में नहीं रखी थी। कुआँ, बाड़ा, रसोई और विद्यालय एक ही दिन के भीतर आते थे। प्राथमिक विद्यालय कच्चा था। बरसात में पानी भीतर तक घुस आता। जमीन सूखने पर हम सब मिलकर गोबर से लिपाई करते, फिर टाट-पट्टी बिछाती और पाट चलता। शिक्षा के लिए स्थान भी अपने हाथों तैयार करना पड़ता था। उस धरती पर बैठकर अक्षर सीखते हुए हममें से किसी ने शायद ही सोचा होगा कि पढ़ने की इच्छा अपने लिए कितने छोटे-छोटे अवलंब जुटा रही है।

किसी पात्र में भरे पानी को देखकर उसका पूरा परिचय नहीं मिल जाता। रस्सी की घिसावट, कुर्छे की गहराई, जगत की फिसलन और लौटते कंधे की थकान भी उसमें सम्मिलित हैं। बचपन में ये सब किसी विचार के प्रमाण नहीं थे। यही दिनचर्या थी। बाद में समझ आया कि उपभोग की वस्तु अपने भीतर अनेक अदृश्य संबंध संजोए रहती हैं। जब हम केवल वस्तु देखते हैं, तो उसे संभव बनाने वाले मनुष्यों और प्रकृति का एक बड़ा अंश हमारी दृष्टि से छूट जाता है।

आवागमन को अगली पीढ़ी के लिए सुरक्षित रखना कोई सांस्कृतिक उत्तरदायित्व नहीं है। बच्चों को ऐसी कठिनाइयों से मुक्त शिक्षा मिले, यही वांछनीय है। मेरे अनुभव का मूल्य कठिनाई को आदर्श बनाने में नहीं, उन आवश्यकताओं को पहचानने में है जिनके अभाव में मनुष्य को अपनी शक्ति का इतना अंश व्यय करना पड़ा।

सुविधा का उचित उपयोग इस पहचान को नष्ट किए बिना भी संभव है। पानी घर तक आए, प्रकाश सहज मिले, विद्यालय सुरक्षित हो और रसता सुगम बने। इनसे बचा समय अध्ययन, सुजन और विश्राम में लग सकता है। प्रश्न यह है कि सुविधा मिलने पर हमारा संबंध केवल तैयार वस्तु से रह जाएगा अथवा उसे संभव बनाने वाली प्रक्रिया से भी बना रहेगा। श्रम का बोझ घटना और श्रम का सम्मान बनाए रखना एक-दूसरे के विरोधी प्रयोजन नहीं हैं।

यहीं मेरी माटी स्मृति से आगे बढ़कर दृष्टि बनती है। उसने मुझे वस्तु के भीतर संबंध देखना सिखाया। पानी में उसे डोने का परिश्रम था, रोटी में रसोई का समय, विद्यालय में गुरुजन और पढ़ने के लिए सँभाली गई लौ में घर की अनेक व्यवस्थाएँ। मनुष्य अपने प्रयत्न से आगे बढ़ता है, किंतु उसका प्रयत्न भी अनेक सहारों पर खड़ा होता है। अपनी उपलब्धि का संपूर्ण श्रेय स्वयं ले लेना उन सहारों को विस्मृत करना है, जिनके बिना वेसा प्रयत्न संभव ही न होता।

इसका अर्थ अपनी इच्छाशक्ति अथवा पुरुषार्थ का अवमूल्यन नहीं है। नाव में मुझे ही बैठना था, साइकिल का भार मेरे कंधे पर था, पढ़ना भी मुझे ही था। पर नदी पार होने में नाविक की भूमिका मिट नहीं जाती। शिक्षा में गुरुजनों का स्नेह और अनुशासन भी रहता है। अपने पुरुषार्थ को उसके संबंधों सहित देख सके तो आत्मसम्मान अधिक सत्यनिष्ठ होता है। तब सफलता हमें अपने अतीत से काटकर अकेला नहीं करती; वह उन लोगों की उपस्थिति और स्पष्ट कर सकती है जो यात्रा के आरंभ में साथ थे।

अध्यात्म की एक व्यावहारिक भूमि मुझे इस ऋणबोध में दिखाई देती है। अपने अस्तित्व को केवल अपने अर्जन का परिणाम मानने वाला अहंकार यहाँ कुछ विनीत होता है। जिस देह को अपना कहते हैं, उसे अन्न, जल और वायु निरंतर सँभालते हैं। जिस ज्ञान पर गर्व होता है, उसके भीतर दूसरे मनुष्यों की खोज और शिक्षा उपस्थित है। इस परस्परवलंबन का बोध पूजा के समय तक सीमित रहे तो अधूरा है। उसे अपने उपयोग, अपने व्यवहार और अपने निर्णयों में भी उतरना होगा।

ऋणबोध का अर्थ किसी के उपकार के नीचे जीवन भर दबे रहना भी नहीं है। उसने जो संभव किया, उसकी पहचान हमें आगे किसी दूसरे के लिए कुछ संभव करने की ओर ले जाए। शिक्षा मिली है तो उसकी पहुँच बढ़ाने का दायित्व समझ में आए। किसी के श्रम ने हमारा दिन सँभाला है तो उसके समय और गरिमा का मूल्य पहचानें। कृतज्ञता अपनी पूर्णता में व्यवहार बदलती है। वह केवल अतीत को धन्यवाद देकर वर्तमान के अन्याय से आँख नहीं फेर सकती।

इसलिए घर की रसोई में उठता धुआँ याद करते हुए धरेलू श्रम का न्यायपूर्ण विभाजन भी सोचना पड़ता है। कुर्छे से पानी लाने की स्मृति जल की उपलब्धता का प्रश्न उठाती है। पढ़ाई के लिए कंधे पर उठी साइकिल सुगम आवागमन की आवश्यकता सामने रखती है। स्मृति तभी जीवनोपयोगी होती है जब उससे प्राप्त संवेदना किसी दूसरे की वर्तमान कठिनाई पहचान सके। अन्यथा हम अपने संघर्ष का गौरव सुनाते रह जाएँगे और सामने खड़ा बालक उसी अवरोध से जूझता रहेगा जिसे पार कर लेने पर हमें गर्व है।

माटी से जुड़े रहने का आशय मेरे लिए इसी उत्तरदायित्व में खुलता है। जन्मस्थान की गंध प्रिय है; उससे उज्जा विवेक अधिक दूर तक साथ जाता है। कार्यालय में बैठा मनुष्य भी उसे निभा सकता है, हेगर में पला बालक भी श्रम के प्रति सजग हो सकता है। गाँव में जन्म लेना मनुष्यता का प्रमाणपत्र नहीं है। अपने जीवन के आधारों को पहचानना और दूसरों के जीवन को सुविधाजनक बनाने में अपना अंश देना, इस संबंध को अधिक व्यापक बनाता है।

अब स्मृति में वह चिमनी फिर सामने आती है। कपड़ा फेरते ही कालिख हटती है और भीतर की लौ कुछ अधिक साफ दिखाई देती है। पुस्तक अभी खोली जानी है। उसके पहले इतना काम हुआ है, जिसका उल्लेख आगे किसी परीक्षा-परिणाम में नहीं होगा। वर्षों बाद उस पृष्ठ पर झुके बालक को देखातूँ तो उसके पीछे घर और परिवेश का पूरा श्रम दिखाई देता है। उसने जो पढ़ा, उसमें उन सबका अंश था। अपने अर्जित उजाले में उन अंशों को पहचानना ही शायद शिक्षा का वह पाठ है, जो किसी उपाधि के साथ समाप्त नहीं होता।

—अतिथि सम्पादक, डॉ. दीप नारायण पाण्डेय (इंडियन फारेस्ट सर्विस से सेवानिवृत्त, वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान सहित अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर) (यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)



डॉ. जे. के. गर्ग

नव और रात्र शब्दों से मिलकर बना है नवरात्रि। नव का अर्थ है नौ, वहीं रात्र शब्द में पुन: दो शब्द शामिल हैं रा का अर्थ है रात और त्रि का अर्थ है जीवन के तीन पहलू यानी-शरीर मन और आत्मा नि:संदेह जीवन में हर एक को तीन प्रकार की मुश्किल समस्याओं का

सामना करना ही पड़ता है वों भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिक होती है। इन सभी समस्याओं से जो छुटकारा दिलवाने वाली रात्रि ही होती है। रात्रि या रात मनुष्यों को दु:ख से मुक्ति दिलाकर उनके जीवन में यश सुख सुविधा खुशहाली लाती है।

सच्चाई तो यही है आदमी को आराम सिर्फ रात्रि में ही मिलता है। रात की गोद में हम सभी अपने सारे सुख दु:ख को भूल कर नौद का आनन्द लेते है। शक्ति स्वरूप माता की आराधना के नवरात्रि के नो दिन माने गए हैं। जहाँ चैत्र नवरात्रि के दौरान कठिन साधना और कठिन व्रत का महत्व है वहीं दुसरी तरफ शादीय नवरात्रि के नो दिन के दौरान सात्विक साधना, नृत्य, उत्सव आदि का आयोजन किया जाता है।

मान्यता है कि चैत्र नवरात्रि की

साधना आपको मानसिक रूप से मजबूत बनाती है और आध्यात्मिक इच्छाओं की पूर्ति करने वाली है। वहीं शारदीय नवरात्रि सांसारिक इच्छाओं को पूरा करने वाली मानी जाती है। नवरात्रि माँ के अलग अलग रूपों को निहाने और उत्सव मनाने का पर्व है। मान्यताओं के अनुसार देवी दुर्गा ने अश्विन के महीने में महिषासुर पर आक्रमण कर उससे नौ दिनों तक युद्ध किया और दसवें दिन उसका वध किया इसलिए इन नौ दिनों को शक्ति की आराधना के लिए समर्पित कर दिया गया है।

कहा जाता है कि शारदीय नवरात्रि धर्म की अधर्म पर और सत्य की असत्य पर जीत का प्रतीक है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इन्हीं नौ दिनों में मां दुर्गा धरती पर आती है और धरती

को उनका मायका कहा जाता है। उनके आने की खुशी में इन दिनों को दुर्गा उत्सव के तौर पर देशभर में धूमधाम से मनाया जाता है।

चैत्र नवरात्रि के अंत में राम नवमी आती है। धार्मिक मान्यता के है कि प्रभु श्रीराम का जन्म रामनवमी के दिन ही हुआ था, जबकि शारदीय नवरात्रि के अंतिम दिन महानवमी के रूप में मनाया जाता है।

नवरात्रि के इस उत्सव पर कई प्रकार की पौराणिक मान्यता। मान्यता के अनुसार इन नौ दिनों में श्रीराम ने सीता माता को रावण की कैद से छुड़वाने के लिए देवी दुर्गा की आराधना की थी। उन्होंने 1०8 कमलों की पूजा ना नौ दिनों तक की थी। जिसके पश्चात देवी दुर्गा उनके इस पूजा से प्रसन्न हो कर उन्हें विजयी होने का

आशीर्वाद दिया था। उसके पश्चात राम ने अंहकारी रावण का वध किया था। इसी संदर्भ में यह भी जानना जरूरी है कि धार्मिक ग्रन्थों में दुर्गा सप्तशती के अन्तर्गत देव दानव युद्ध का विस्तृत वर्णन किया गया है जिसमें बताया गया है कि देवी भगवती और मां पार्वती ने किस प्रकार से देवताओं के साम्राज्य को स्थापित करने हेतु तीनों लोकों में उत्पात मचाने वाले बलशाली दानवों से लोहा लिया था, इसी वजह से आज सम्पूर्ण देश में हजारों की संख्याओं में दुर्गा यानी नवदुर्गा गौरवमयी परंपरा चली आ रही है।

नवरात्रि का पर्व 11 से 21

2०2६ तक मनाया जाएगा।

—डॉ. जे. के. गर्ग, पूर्व संयुक्त निदेशक कॉलेज शिक्षा

कहां गए ब्रज के कदंब ? कृष्ण की लीला भूमि में सूखती स्मृतियों की पुकार

प्राकृतिक पहचान का हिस्सा रहे हैं।

इसी ब्रज क्षेत्र में राजस्थान की सीमा के भीतर पूंछरी का लौटा से लगभग एक मील पश्चिम दक्षिण में स्थित श्यामढाक का क्षेत्र भी अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। वर्षों से ब्रज क्षेत्र की यात्राएं करने के दौरान इस इलाके को करीब से देखने का अवसर मिला है। कभी यहां दूर-दूर तक कदंब के वृक्ष दिखाई देते थे। ऐसा लगता था मानो प्रकृति ने स्वयं कृष्ण की बाल लीलाओं के लिए एक विशाल रंगमंच तैयार कर रखा हो। आज वही दृश्य स्मृति बनता जा रहा है।

एक समय ब्रज के इन हिस्सों में सैकड़ों-हजारों कदंब के पेड़ होने की बात बुजुर्गों और स्थानीय लोगों की स्मृतियों में मिलती है। कदंब की घनी छांव और उसके नीचे की प्राकृतिक हरियाली पूरे वातावरण को एक अलग ही सौंदर्य प्रदान करती थी। लोकविश्वासों में तो यहां तक कहा जाता है कि कृष्ण अपने सखाओं के साथ इन्हीं वृक्षों के बीच खेलते, पत्तों के प्राकृतिक दोने बनाकर उनमें माखन खाते और छछर पीते थे।

डींग जिले के एंचरा गांव की ऐतिहासिक कदंब खंडी इस स्मृति का एक महत्वपूर्ण केंद्र मानी जाती है। स्थानीय स्तर पर प्रचलित विवरणों के अनुसार कभी यहां बड़ी संख्या में प्राचीन कदंब वृक्ष थे और अब उनकी संख्या बहुत कम रह गई है। विशेष बात यह भी बताई जाती है कि यहां के कदंब वृक्षों के पत्ते प्राकृतिक रूप से दोने अथवा कटोरी के आकार में विकसित होते हैं। यह विशेषता इस स्थल को

कदंब खंडी जैसे स्थलों पर केवल पौधरोपण पर्याप्त नहीं होगा। वहां बचे

हुए प्राचीन वृक्षों की वैज्ञानिक गणना होनी चाहिए। प्रत्येक वृक्ष का संरक्षण रिकार्ड तैयार किया जाना चाहिए। जलस्तर, मिट्टी और सिंचाई की स्थिति का वैज्ञानिक अध्ययन होना चाहिए। स्थानीय समुदाय को संरक्षण से जोड़ा जाना चाहिए और ऐसे स्थानों को ‘कृष्णकालीन प्राकृतिक विरासत’ के रूप में विकसित करने की दिशा में गंभीर पहल होनी चाहिए।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि कदंब के पौधे लगाकर उनकी तत्सीर खिंचवा लेना संरक्षण नहीं है। संरक्षण तब होगा जब लगाया गया पौधा वर्षों बाद वृक्ष बने और उसके नीचे आली पीढ़ी बैठ सके। ब्रज में आने वाले श्रद्धालु केवल मंदिरों और धार्मिक स्थलों के दर्शन करने नहीं आते। वे उस ब्रज को देखने आते हैं जिसको कल्पना कृष्ण की बाल लीलाओं के साथ की गई है। यदि ब्रज से उसकी प्राकृतिक पहचान धीरे-धीरे समाप्त होती गई तो एक दिन हमारे पास केवल मंदिर होंगे, कथाएं होंगी और स्मारक होंगे—लेकिन वह प्रकृति नहीं होगी जिसने इन कथाओं को जन्म दिया और पौढ़ियों तक जीवित रखा।

मुख्यमंत्री स्वयं भरतपुर क्षेत्र से आते हैं। वे ब्रज की धार्मिक और सांस्कृतिक महत्ता से परिचित हैं। ऐसे में उनसे यह अपेक्षा स्वाभाविक है कि ब्रज की प्राकृतिक विरासत के संरक्षण की भी विशेष प्राथमिकता मिले। अब आवश्यकता इस बात की है कि इन पहलों को ब्रज के कदंब संरक्षण से भी जोड़ा जाए। श्यामढाक से लेकर कदंब खंडी तक एक विशेष ‘ब्रज कदंब

सेवा सेतु अभियान–2०26 में आमजन को मिल रही राहत

अजमेर विकास प्राधिकरण द्वारा संचालित सेवा सेतु अभियान में नागरिकों को राहत प्रदान की जा रही है

अजमेर, (निर्स)। आमजन की समस्याओं के त्वरित समाधान एवं सरकारी सेवाओं को अधिक सुगम बनाने के उद्देश्य से अजमेर विकास प्राधिकरण द्वारा संचालित सेवा सेतु अभियान–2०26 के अंतर्गत नागरिकों को राहत प्रदान की जा रही है। अभियान के तहत 7 अक्टूबर से आयोजित शिविरों में विभिन्न सेवाओं से संबंधित आवेदन प्राप्त कर विनियामुसार कार्यवाही की जा रही है, जिससे नागरिकों को अपने कार्यों के निस्तारण के लिए प्रभावी सुविधा उपलब्ध हो रही है।

अभियान के तहत अब तक आयोजित शिविरों में कुल 181 आवेदन प्राप्त हुए, जिनमें से 178 प्रकरणों का सफलतापूर्वक निस्तारण किया जा चुका है। निस्तारित प्रकरणों में कृषि भूमि पर बसी स्वीकृत योजनाओं में पट्टा जारी करने के 18 प्रकरण, प्राधिकरण की स्वयं की योजनाओं से संबंधित 16 प्रकरण, बकाया लीज राशि जमा करवाकर फ्री होल्ड एवं लीज मुक्ति प्रमाण पत्र के 1० प्रकरण, भवन मानचित्र स्वीकृति के 7 प्रकरण, निर्माण अवधि विस्तार के 52 प्रकरण, नाम हस्तांतरण के 60 प्रकरण, भूखण्डों के

उप विभाजन एवं पुनर्गठन के 6 प्रकरण तथा लीज होल्ड से फ्री होल्ड के 9 प्रकरण शामिल हैं।

शिविरों के माध्यम से नागरिकों को विभिन्न सेवाओं की प्रक्रिया, आवश्यक दस्तावेजों एवं लंबित प्रकरणों के संबंध में संबंधित अधिकारियों से सीधे जानकारी एवं मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है। प्राधिकरण के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा आवेदकों की समस्याओं को सुनते हुए नियमानुसार कार्यवाही की जा रही है, ताकि पात्र नागरिकों को सेवाओं का लाभ समयबद्ध रूप से उपलब्ध करवाया जा सके।



परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज आपसी सहयोग-समन्वय से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज ब्रजवासियों में उचित सफलता मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज ब्रजवासियों में उचित सफलता मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज ब्रजवासियों में उचित सफलता मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। दिन के मध्याह्न पश्चात शुभ संदेश प्राप्त होंगे। आज धार्मिक कार्यों पर धन हानि हो सकती है।

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। दिन के मध्याह्न पश्चात शुभ संदेश प्राप्त होंगे। आज धार्मिक कार्यों पर धन हानि हो सकती है।

आवश्यक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज घर-परिवार में अनावश्यक धन खर्च होगा। परिवार में कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। दिन के मध्याह्न पश्चात मानसिक तनाव दूर होगा।

अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज ब्रजवासियों में उचित सफलता मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज ब्रजवासियों में उचित सफलता मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज ब्रजवासियों में उचित सफलता मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आपसी सहयोग से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को दलना ठीक रहेगा। दिन के मध्याह्न पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक-मांगलिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को दिन के मध्याह्न पूर्व करने का प्रयास करें। दिन के मध्याह्न पश्चात अष्टम चन्द्र शुभ नहीं है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।